RECEIVED
06 SEP 2022

TEST CODE : 5 1 5 3 4

FIAS | MGP 2022 (C-12) | Essay Test #4

ForumIAS

ESSAY

Name Of Candidate	MOIN AHAMD (हिन्दी माध्यम)		
Roll No.	1910103471	Date:	23/08/22

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

INDEX TABLE		
Q. No.	Max. Marks	Marks Obtained
Q.1		
Q.2		
Total:	250	

Evaluator's Discretion:

Total Marks:

Evaluator's Discretion: This is the marks awarded at the discretion of the evaluator based on your overall impression, on the basis of (but not limited to) your handwriting, presentation, use of diagrams, flowcharts, facts and figures or absolutely anything that he/she liked in your copy.

INSTRUCTION

1. Please do furnish Name, Email, Roll No and Mobile in the answer sheet.
2. There are TWO Sections. Each Section has MULTIPLE topics printed in English & Hindi. You have to write on 1 topic from Each part
3. One question in each part is compulsory.
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.

Any specific messages for ForumIAS Mentors/ Evaluators with respect to your copy? Write it here.

For Student Only

Start Time | 02:00 PM	End Time | 04:45 PM
Mode Of Examination:	Online ☐ Offline ☑

For Office Use Only

ECN CODE:	EG:	Evaluation Date:

ForumIAS

MARKING SCHEME

Parameter/Criteria	*Aspects Considered*	*Total Marks*	*Essay 1*	*Essay 2*
Basic Format	Introduction + Conclusion	10		
	Body	15		
Content	Data/Facts/Interpretation/ Analysis	25		
Organisation	Flow of ideas/ Absence of Deviation from the topic	25		
Language Skills	Punctuation/Grammar/ Sentence Formation/Spellings	25		
Examiner's Discretion	Perception/ Innovation/ Engaging	25		

Parameters	*Very Good*	*Good*	*Average*	*Poor*
Coherence				
Language				
Handwriting				
Pre-writing				

Very Good	*Good*	*Average*
120 and above	100-120	Below 100

ForumIAS

SECTION – A

1. Happiness is nothing more than good health and a bad memory.

   प्रसन्नता अच्छे स्वास्थ्य और बुरी याददाश्त से ज्यादा कुछ नहीं है।

2. One can evade reality but one cannot evade consequences of evading reality.

   कोई वास्तविकता से बच सकता है लेकिन वास्तविकता से बचने के परिणामों से नहीं बच सकता।

3. Civilization begins with order, grows with liberty and dies with chaos.

   सभ्यता व्यवस्था से शुरू होती है, स्वतंत्रता के साथ बढ़ती है और अराजकता से मर जाती है।

4. Listen with curiosity, speak with honesty, act with integrity.

   जिज्ञासा से सुनें, ईमानदारी से बोलें, सत्यनिष्ठा से कार्य करें।

जिज्ञासा से सुनें, ईमानदारी से बोलें, सत्यनिष्ठा से कार्य करें

"संचार के साथ सबसे बड़ी समस्या है कि हम समझने के लिए नहीं सुनते हैं हम जवाब (जवाब) सुनते हैं"

"जब हम जिज्ञासा के साथ सुनते हैं, तो हम जवाब (जवाब) के इरादे से नहीं सुनते हैं, बल्कि हम सुनते हैं कि शब्दों के पीछे क्या है"

उपर्युक्त लाइनें स्पष्ट करती हैं कि किसी भी कार्य को सम्पादित

करने के पूर्व उनको सत्यनिष्ठा पूर्वक क्रियान्वित करने एवं ईमानदारी से बोलने से पहले। जिज्ञासा पूर्ण सुनना जरूरी है। ताकि कार्य का उद्देश्य सही व उचित ढंग से प्राप्त किया जा सके।

जिज्ञासा के साथ सुनने की प्रवृत्ति ऐतिहासिक काल से विद्यमान है एवं राष्ट्रीय आंदोलन, शैक्षणिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, वैज्ञानिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, पारिस्थितिक क्षेत्र में जिज्ञासा से सुनने एवं ईमानदारी से बोलने तथा सत्यनिष्ठा से कार्य करने के उपरांत उद्देश्य की प्राप्ति हुई।

ऐतिहासिक काल में महात्मा बुद्ध ने जिज्ञासा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिए राजत्याग किया एवं कई वर्षों की तपस्या के उपरांत ज्ञान प्राप्ति हुई, जिसे उन्होंने ईमानदारी पूर्वक "अष्टांगिक मार्ग" की संकल्पना, मध्यम मार्ग, अहिंसा के प्रति समर्पण जैसे मूल्यों के रूप में बताया। उन्होंने तत्परिष्ठा से युक्त जीवनशैली द्वारा इसे प्राप्त करने का प्रयास किया एवं भिक्षु जीवन व्यतीत किया तथा संघ की स्थापना की एवं उनके सिद्धान्तों का प्रभाव अशोक महान्, अकबर की दीन-ए-इलाही नीति में नजर आता है।

इसी जिज्ञासापूर्ण शैली को राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं व समाजसुधारकों ने स्वीकार किया एवं पाश्चिमी आलोचना जैसे - भारत में राष्ट्रवाद नहीं है, भारत असभ्य एवं पिछड़ा राष्ट्र, को सुना एवं गाँधी द्वारा ईमानदारी पूर्वक कहा कि हम राष्ट्र से बढ़कर सभ्यता हैं एवं अरविंदो घोष ने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में कहा।

राष्ट्रीय नेताओं द्वारा इसका सत्यनिष्ठा इस्तेमाल खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में किया गया, और अन्ततः अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा एवं स्वराज व संविधान तैयार हुआ।

संविधान बनाने के समय जिज्ञासा-पूर्ण अन्य देशों के संविधान अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया तथा ऐतिहासिक भारतीय परंपरा एवं सभ्यता को ध्यानपूर्वक अवलोकित किया गया एवं ईमानदारीपूर्वक इसके पक्ष - विपक्ष एवं भारतीय परिस्थिति के अनुसार शामिल करने को संविधान सभा में बहस की गई।

सत्यनिष्ठा पूर्ण कार्य करने के उद्देश्य से विभिन्न समितियों स्वरूप, संघ आदि का निर्माण किया, जिसका परिणाम संवैधानिक आदर्शों न्याय, समानता, स्वतंत्रता, एकता, अखंडता एवं बंधुत्व के रूप में सामने आया, जिसने भारतीय लोगों एवं शासन में स्वराज्य एवं नेतृत्व भावना विकसित की।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Visit us : www.forumias.com
Email : helpdesk@forumias.academy

(Don't Write anything in this Area)

नेतृत्व का उदाहरण करते हुए सतीश धवन ने अंतरिक्ष प्रक्षेपण के लिए जिज्ञासापूर्ण सहयोगियों एवं राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों से संवाद स्थापित किया परंतु एसएलवी के असफल प्रक्षेपण की ईमानदारी स्वीकार किया।

असफल प्रक्षेपण से सीख एवं सत्यनिष्ठा से काम करते हुए पुनः अगले साल एसएलवी का सफल परीक्षण किया एवं आज इससे पीएसएलवी, जीएसएलवी, चन्द्रयान जैसे मिशनों में सत्यनिष्ठा का पालन करने से बुलंदियों के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है एवं भारत में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रसार हो रहा है।

वैश्विक स्तर पर वैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रसार के लिए अल्बर्ट आइंस्टीन ने जिज्ञासापूर्ण जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका की यात्राएँ, ज्ञान संवर्धन के लिए की एवं तर्क-वितर्क के माध्यम से ईश्वर को पहचानने की कोशिश की परंतु ईमानदारी स्वीकार किया कि मुझे तो ईश्वर मिला नहीं।

अपने कार्य के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा रखने का ही परिणाम है कि आइंस्टीन के द्वारा प्रकाश वैद्युत प्रभाव एवं सापेक्षता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसने कई अनसुलझे समस्याओं का निराकरण किया साथ ही बढ़ती वैज्ञानिक प्रगति ने पर्यावरण संकट को भी जन्म दिया।

पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा का इतिहास यूनानी युग एवं गाँधी जितना पुराना है, परन्तु आधुनिक विश्व में इसे जिज्ञासा ने 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन से चुना गया, जब पर्यावरण के दुष्परिणाम सामने आए, ब्रटलैंड आयोग द्वारा ईमानदारी पूर्वक जीरो ग्रोथ की बात कही गई।

1992 में पृथ्वी सम्मेलन सतत्‌ विकास के कार्य करने का ही परिणाम है जहाँ जलवायु परिवर्तन शमन, जैव-विविधता संरक्षण, मरुस्थलीकरण को रोकने की बात सामने आई साथ ही पर्यावरण संरक्षण बनाम आर्थिक विकास का मुद्दा भी प्रभावी बनकर सामने आया।

आर्थिक क्षेत्र में भारत के द्वारा 1929 की मंदी, 1970 के दशक में तेल संकट का जिज्ञासापूर्ण अध्ययन किया एवं 1991 में ईमानदारीपूर्वक स्वीकार किया गया कि आयात रिजर्व 1 माह से भी दिन का है एवं उदारीकरण को स्वीकार किया।

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण के क्षेत्र में सत्यनिष्ठा से कार्य करने का ही परिणाम है कि आज भारत दुनिया की पाँचवी अर्थव्यवस्था एवं वैश्विक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामना आया तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघों को प्रभावित कर रहा है।

परंतु कुछ क्षेत्रों में जिज्ञासा से सुनने, ईमानदारी से बोलने के उपरांत भी सत्यनिष्ठा से कार्य करने का अभाव है:

राजनीतिक क्षेत्रों में स्वच्छ से अपना कैरियर बनाने वाले व्यक्ति जनता के सामने ईमानदारी पूर्वक संविधान एवं विधि की शपथ लेते हैं परंतु उनके कार्य में सत्यनिष्ठा का अभाव स्पष्ट है। जैसे 2G एवं स्पेक्ट्रम घोटाला

प्रशासनिक क्षेत्र में भी जिज्ञासापूर्ण अध्ययन के उपरांत एवं इंटरव्यू एवं विभिन्न स्तरों पर ईमानदारीपूर्वक नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति समर्पण रखेंगे। बोलने के बावजूद नैतिक मूल्यों का ह्रास एवं सत्यनिष्ठा का अभाव चुनौती है, दोहरी प्राप्ति के लिए नैतिक संहिता एवं आचरण संहिता विद्यमान है

प्रशासन से मिलीभगत के कारण कॉरपोरेट क्षेत्र में भी ईमानदारीपूर्वक व्यक्ति, पृथ्वी, लाभ के सिद्धान्त को सिर्फ बताया जाता है परंतु क्रोनी कैपिटलीज्म एक गंभीर समस्या है, जो सत्यनिष्ठा की उल्लंघन का स्पष्ट उदाहरण है।

वर्तमान में जिज्ञासपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं मंचों का हिस्सा बना जाता है, ईमानदारी पूर्वक बातें की जाती है [पेरिस सम्मेलन, क्योटो प्रोटोकाल, सुरक्षा परिषद चार्टर द्वारा सम्प्रभुता की रक्षा] परंतु कार्य सत्यनिष्ठा से नहीं किए जाते है। जैसे→ अमेरिका द्वारा पेरिस समझौते से बाहर आना एवं चीन का दक्षिणी चीन सागर में अनक्लोस (UNCLOS) नियम का पालन नहीं करना

प्रशासन में बेहतर तरीके से लोग जिज्ञासापूर्ण सुनें एवं ईमानदारी से गलती स्वीकार करें ताकि भारत @75 साल के अमृत लक्ष्यों [सर्वसमावेशी विकास, स्वतंत्रता, समानता, न्याय तक सबकी पहुँच] को प्राप्त किया जा सके एवं सत्यनिष्ठापूर्वक कार्य करें, इसके लिए सरकार द्वारा "मिशन कर्मयोगी" की शुरुआत की गई है।

Rough Work

History

Science

Polity

Economy

Env

Admin

Nat'nal

Society

Int rel

Science → Env → Economy

National → Polity → Admin

Feedback

Feedback to be provided in terms of (1) Introduction (2) Sentence Constructions (3) Parapgraph Formation (4) Legibility (5) Deviation from Topic (6) Coverage of dimensions (7) Simplicity / ease of reading

SECTION – B

1. Science gathers knowledge faster than society gathers wisdom.

   समाज द्वारा संग्रहण किए गए बुद्धिमत्ता की तुलना में विज्ञान ज्ञान का संग्रहण तीव्र गति से करता है।

2. Energy drives economies and sustains societies.

   ऊर्जा अर्थव्यवस्थाओं को संचालित करती है और समाजों को बनाए रखती है।

3. Those who wish to reap the blessings of liberty must undergo the fatigues of supporting it.

   जो लोग स्वाधीनता के आशीर्वाद का फल भोगना चाहते हैं, उन्हें इसका समर्थन करने की थकान से गुजरना होगा।

4. Research is formalised curiosity and creation of new knowledge.

   अनुसंधान औपचारिक जिज्ञासा और नए ज्ञान का सृजन है।

अनुसंधान औपचारिक जिज्ञासा और नए ज्ञान का सृजन है।

"आवश्यकता, आविष्कार की जननी है"

उपर्युक्त कथन दर्शाता है, जब-जब मानवीय सभ्यता को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती, किसी नए आविष्कार का जन्म होता है, जैसे वर्तमान में कोरोना वायरस की

रोकथाम के लिए बनाई गई वैमनस्य मानवीय जीवन को सुरक्षित रखने के लिए बनाई गई, यही ठीक उसी प्रकार नजर आता है जिस प्रकार थॉमस हॉब्स ने अपनी पुस्तक लेवियाथन में कहा था कि "मनुष्य, स्वार्थी एवं लालची होता है" परंतु उसे नियंत्रित करने के लिए नए ज्ञान के रूप में "सामाजिक समझौते" द्वारा राज्य का निर्माण किया गया।

अनुसंधान, नए ज्ञान एवं जिज्ञासा का परिणाम है, इसे हम ऐतिहासिक, प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक एवं पर्यावरण के क्षेत्र में महसूस कर सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप में हम देखते हैं कि जिज्ञासा से नए ज्ञान की खोज के लिए महात्मा बुद्ध द्वारा गृह त्याग किया गया एवं उरुवेला नामक वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या के पश्चात् ज्ञान की प्राप्ति हुई, जो अनुसंधान की प्राप्ति को दर्शाती है।

कालांतर में भी विभिन्न राजाओं द्वारा बौद्ध धर्म पर अनुसंधान किए गए एवं अशोक के द्वारा कलिंग युद्ध के पश्चात् बिखरी लाशों को देखकर यह दृढ़ निश्चय किया गया कि युद्ध ही शांति का एकमात्र समाधान नहीं है, और उसने नए ज्ञान के सृजन के रूप में धम्म नीति की स्थापना की, उसी काल के महान कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की।

(Don't Write anything in this Area

जिसमें प्रशासन को नियंत्रित एवं राज्य की एकता को मजबूत करने के लिए शक्ति राजनीति के नए ज्ञान का सृजन किया गया, जबकि अभी तक राज्य एवं राजनीति में नैतिकता की प्रधानता थी, उसने नए अनुसंधान के रूप में सप्तांग सिद्धान्त, मंडल सिद्धान्त, साम - दाम - दंड - भेद का प्रतिपादन किया।

कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित शक्ति राजनीति का ज्ञान, आज समूची अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अनुसंधान का विषय है, जिसे राष्ट्रीय हित का नाम दिया जाता है एवं पश्चिमी चिंतक मैकियावली का भौतिकतावादी, धर्मनिरपेक्ष, शक्ति राजनीति का चिंतन कौटिल्य की अनुगामी है एवं राज्य की सुदृढ़ता भी पहले से विद्यमान था

(Don't Write anything in this Area)

मैकियावली के द्वारा "द प्रिंस" में नए ज्ञान के रूप में शासन कला एवं शक्ति राजनीति का विचार प्रतिपादित किया गया ताकि राज्य की सुरक्षा एवं एकता पर किसी प्रकार का खतरा न हो, एवं दैवीय राजा के सिद्धान्त को समाप्त किया गया, जिसका समर्थन पाश्चिमी दार्शनिक "फिल्मर" ने किया था।

वर्तमान में राज्य की सुरक्षा ही प्रमुख है और राज्य को सुदृढ़ एवं मजबूत करने के लिए सीमाओं पर इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस, सेना का आधुनिकीकरण, ड्रोन का इस्तेमाल आदि नए ज्ञान के रूप में सामने आए, जिनपर वर्तमान में भी अनुसंधान चल रहा है एवं भारी-भरकम आर्थिक धनराशि खर्च हो रही है।

आर्थिक मंदी 1929 के बाद लोगों की जिज्ञासा बढ़ी एवं मंदी के कारणों का पता लगाने का प्रयास, तभी एक महान् अर्थशास्त्री जॉन कीन्स ने पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्था के बीच का रास्ता निकालते हुए "मिश्रित अर्थव्यवस्था" का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया परंतु अर्थव्यवस्था का ठीक से काम न कर पाने की दिशा में "विनिवेश एवं रणनीतिक" विनिवेश जैसे ज्ञान का सृजन हुआ, जिस पर वर्तमान में अनुसंधान चल रहा है कि यह किस हद तक सफल है एवं चर्चिल का कथन है कि

"सार्वजनिक उपक्रमों को तब तक न बेचा जाए, जब तक उनके उत्थान की उम्मीद समाप्त न हो जाए"

(Don't Write anything in this Area)

क्योंकि विनिवेश से बेहतर क्षेत्रों में संचरित सामाजिक उपक्रमों की बिक्री से भौगोलिक असमानता को बढ़ावा मिलता है।

भौगोलिक सिद्धान्त में पृथ्वी की प्रक्रिया (संसार एवं पृथ्वी का निर्माण कैसे हुआ) से सम्बन्धित बिग-बैंग सिद्धान्त जैसे नए ज्ञान का निर्माण जिज्ञासा के कारण हुआ।

कालांतर में इसे और आगे बढ़ाते हुए बिग-बैंग पर कई अनुसंधान आयोजित रहे एवं नेबुला सिद्धान्त (बादलों का निर्माण) सामने आया, बाद में वेगनर का महाद्वीपीय सिद्धान्त, प्लेट विवर्तनकी सिद्धान्त, नए ज्ञान के सृजन हैं, जिनपर अभी भी अनुसंधान जारी है एवं ब्रह्मांड निर्माण को समझा जा रहा है।

ब्रह्माण्ड को समझने के लिए चन्द्रयान, मंगलयान, एवं अन्य ग्रहों पर अनेक मिशनों को जिज्ञासापूर्ण भेजा गया एवं नए ज्ञान के रूप में मंगल पर जीवन की संभावना एवं चाँद पर मॉलोनी जैसा विचार सामने आया। स्पेसएक्स के द्वारा मंगल पर जीवन की संभावनाओं के लिए अनुसंधान कार्यरत है क्योंकि स्टीफन हॉकिन्स ने भी मानवीय जातीय चेतना को चेतावनी एवं नए ज्ञान के रूप में अगले कुछ सौ सालों में पृथ्वी पर जीवन न हो पाने की बात कही, जिसपर अनुसंधान कार्यरत है एवं पृथ्वी के पर्यावरण के संरक्षण की बात भी सामने आयी।

(Don't Write anything in this Area)

पृथ्वी का संरक्षण जैसी परिकल्पना 1970 के दशक में एक नए ज्ञान के रूप में सामने आई एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति रखने वाले आर्ने नेस ने "डीप इकॉलाजी" जैसे ज्ञान का प्रतिपादन किया, जिसपर IMD एवं IPCC अनुसंधान कर रही है।

IPCC के द्वारा अनुसंधान में 1.11°c ताप बढ़ने की बात कही गई एवं नए ज्ञान के रूप में 'मानव जीवन शैली को पर्यावरण" के अनुकूल बनाने की बात कही। जिस पर वर्तमान में अनुसंधान कार्यरत है।

परंतु हमेशा अनुसंधान औपचारिक जिज्ञासा या नए ज्ञान का सृजन ही नहीं होता है बल्कि पुरातन व्यवस्था या किसी घटना पर हो सकता है।

वर्तमान में देखा जा रहा है कि जर्मनी जैसे देशों में वेदों पर रिसर्च चल रही है, जो जिज्ञासा पूर्ण या कोई नए ज्ञान की प्राप्ति नहीं है, बल्कि प्राचीन भारतीय वैदिक काल के ग्रन्थ हैं जो आरंभिक मानवीय सभ्यता को दर्शाते हैं।

आरंभिक ब्रह्माण्ड के निर्माण में प्रयुक्त उल्का पिंड के टुकड़े कभी-कभी पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश कर जाते हैं। क्योंकि उनका दहन पूर्ण रूप से नहीं होता है, जिसपर

अनेक अनुसंधान कार्यरत हैं, जबकि उसमें औपचारिक जिज्ञासा या नए ज्ञान जैसा कुछ प्राप्त नहीं हुआ। यही स्थिति पर्यावरण में अनुसंधान को लेकर है। पर्यावरणीय अनुसंधान इसीलिए नहीं हो रहा है, कि किसी नए ज्ञान की प्राप्ति हुई है, बल्कि मानव जीवन के संरक्षण के लिए हो रहा है। जबकि गाँधी जी ने पहले ही कहा था कि

"प्रकृति सभी की आवश्यकताएँ पूरी कर सकती है, परंतु किसी भी एक व्यक्ति का लालच पूरा नहीं कर सकती है"

विज्ञान के क्षेत्र में भी केमिस्ट्री के क्षेत्र में हुए अनेक अनुसंधान किसी नए ज्ञान की प्राप्ति नहीं बल्कि "पारस पथरी" की खोज के लिए जो किसी वस्तु पर टच करने पर सोने बना देगी जैसी परिकल्पना पर आधारित है

निष्कर्ष

वर्तमान में विश्व भर के लोगों के डीएनए सैंपल एकत्रित करके "वर्ल्ड जीनोम प्रोजेक्ट" के माध्यम से एक नए ज्ञान की प्राप्ति की कोशिश की जा रही है, जिसमें आनुवांशिक बीमारी, आकस्मिक प्रतिरोध क्षमता का कम होना एवं नये महामारी का सामना कैसे किया जाए जैसे तथ्यों का प्रयास किया जा रहा है।
नए ज्ञान की प्राप्ति होने के उपरांत ही अनुसंधान सफल होगा एवं अनुसंधान में भी नए ज्ञान का सृजन होगा, यही निरंतर क्रम मानव जाति की सभ्यता एवं संस्कृति निर्माण में ऐतिहासिक काल से अब तक विद्यमान है, जो आगे भी जारी रहेगा।

"निरंतर, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।"

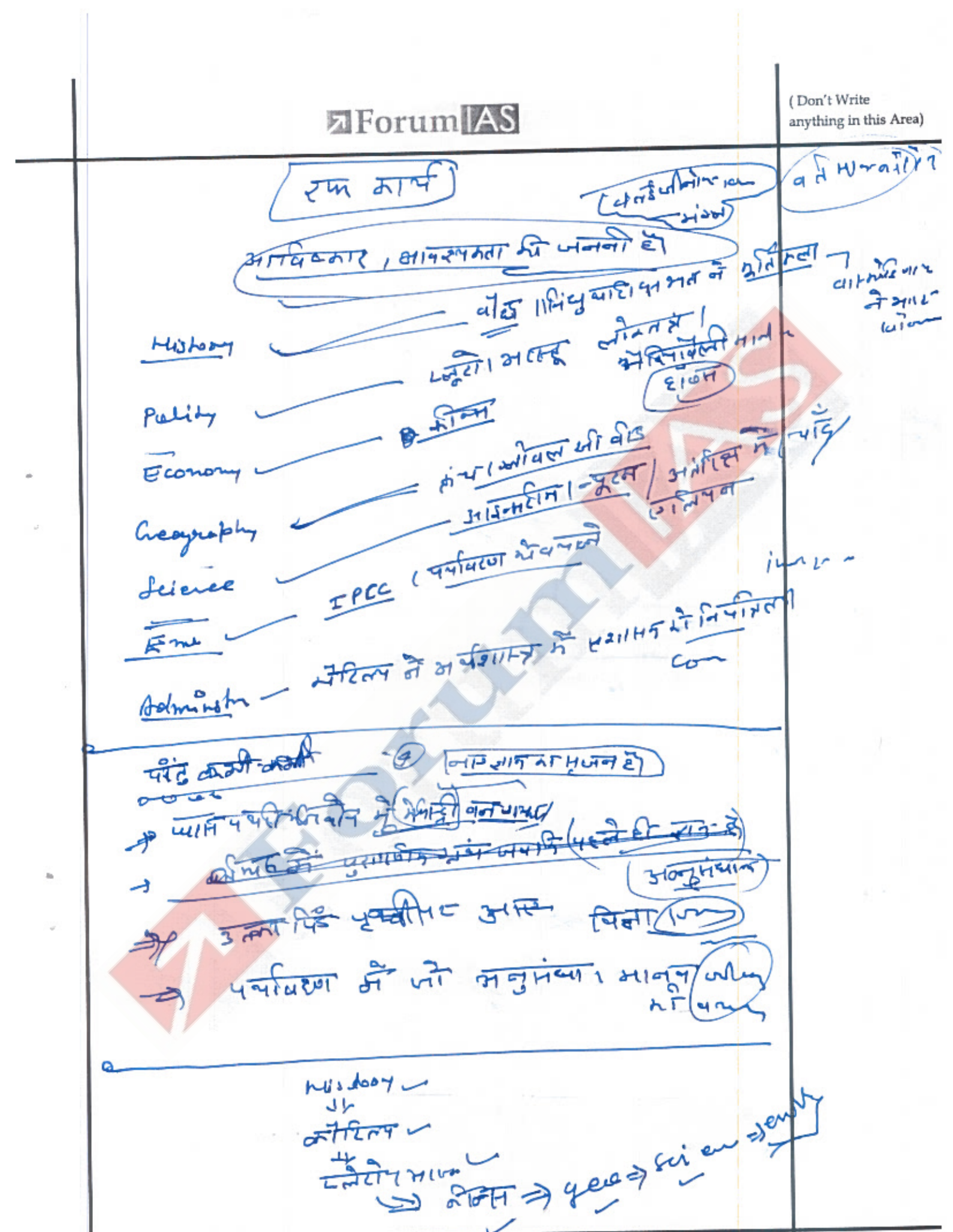

Feedback

Feedback to be provided in terms of (1) Introduction (2) Sentence Constructions (3) Parapgraph Formation (4) Legibility (5) Deviation from Topic (6) Coverage of dimensions (7) Simplicity / ease of reading

ForumIAS

Availing Mentorship - Now made easy & seamless via mentorship.forumias.com

Dear Students,

You can now avail Mentorship in both online & offline mode seamlessly. All you need to do is login to below URL and pick up a date and time and your Mentorship is scheduled at the designated time.

Visit the URL https://mentorship.forumias.com or Scan the QR code

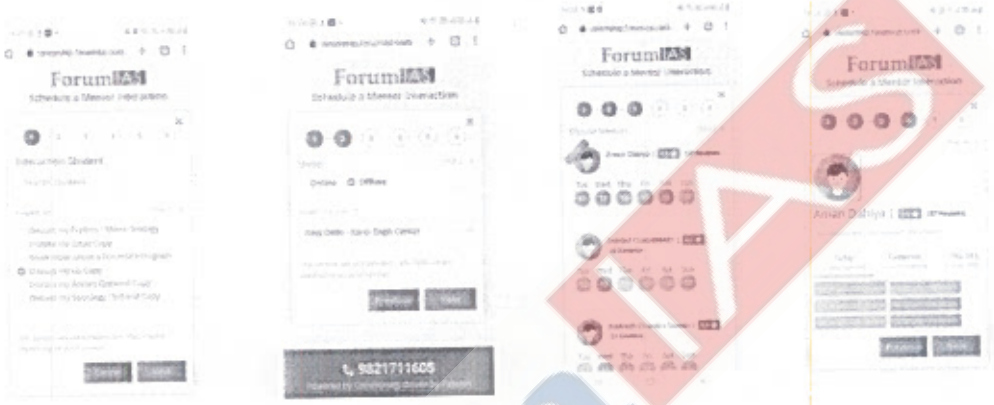

When must you seek mentorship? When you are unable to fully comprehend the directions given by the evaluator in the MGP copy. A Mentor will help you understand the nuiances of your evaluated MGP copy. He / She will also be able to make suggestions, if needed, on improvements that you could make.

If we are already doing well, a reinforcement from the Mentor will further assist us in following the right path. A Mentor may also be able to give valuable inputs with respect to time management, presentation, structure etc. He may recommend you clearly to work on content or may suggest you to take courses / read books in case he feels you lack content that may be quickly improved with a course at ForumIAS or elsewhere, or some study material.

To download topper's copies, visit the link https://blog.forumias.com/testimonials

Topper's Testimonials and Test Copies

CSE 2021 Topper's Testimonials and Test Copies

CSE Rank 1, Shruti Sharma, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 5, Utkarsh Dwivedi, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 8, Ishita Rathi, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 9, Preetam Kumar, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 12, Yasharth Shekhar, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 14, Abhinav J Jain, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 17, Mehak Jain, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 19, Diksha Joshi, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 20, Arpit Chauhan, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 23, Ashish, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 24, Pusapati Sanitya, Download MGP Copies Click Here
CSE Rank 25, Shruti Rajlakshmi, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 26, Utsav Anand, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 28, Mourya Bharadwaj Mantri, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 30, Naman Goyal, Download MGP Copies + Testimonial Click Here
CSE Rank 33, Jaspinder Singh, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 37, V Sanjana Simha, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 39, Vishal Dhakad, Download MGP Copies, Click Here
CSE Rank 40, Kushal Jain, Download MGP Copies, Click Here

Code	Copy id
→ 51532	→ 14 6299
→ 51235	→ 14 2452
→ 51335	→ 14 1923
→ 51435	→ 14 6296

ForumIAS